Atmaj

Special Issus
On
ભારતીય નાટ્ય સાહિત્યઃ વર્તમાન પરિપ્રેક્ષ્યમાં
(INDIAN DRAMATIC LITERATURE: RECENT PERSPECTIVES)

Academic Research Journal

An International Peer-Reviewed Research Journal

ISSN: 2348 - 9456

Impact Factor 3.745

Volume-IX, Issue -VI, February-2018

Editor-In-Chief
Dr. Dilkhush Patel

Scanned with CamScanner

ISSN: 2348-9456
Impact Factor: 3.745

Editor – in - Chief

Dr. Dilkhush U. Patel, PhD

Principal
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College
Vadnagar 384355

Dr. Dilkhush U. Patel
Chief Editor & Publisher
Vadnagar – 384355 Gujarat (India)

Prof. Tushar S. Brahmbhatt
[MA (ELT), MPHIL (ELT), PhD (ENGLISH)]
Department of English
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College
Vadnagar – 38355

Dr. Rakeshkumar G. Rao
Principal
B. P. Brahmbhatt Arts & M. H. Guru Commerce College, Unjha

Dr. M. J. Viradiya
Department of Sanskrit
Smt. A. P. Arts and N. P. Patel Commerce College, Naroda

Dr. D. B. Rathva
Professor and Head
Department of Sanskrit and Bharatiya Vidya
Hemchandracharya North Gujarat University, Patan

Dr. Prakashkumar R. Patel
Head of Economics Dept.
V.N.S. Bank Ltd. Arts and Commerce College
Vadnagar – 38355

Scanned with CamScanner

ISSN: 2348-9456
Impact Factor: 3.745

CONTENT OF THE TABLE

Sr.	Title of the Paper	Author	Page
1.	રંગભૂમિ ધમધોકાર, 'ગુજરાતી' નાટક ગેરહાજર	ભરત મહેતા	08
2.	**ભગવદજ્જુકીયમ્ વિક્રતાની વિડંબણામાં વિલસતો વિનોદ**	**પ્રો. અજમલભાઇ એસ. ગામી**	11
3	Mahesh Dattani's *Dance Like a Man*: A Study in Thematic Aspect	Dr. Mina J. Chaudhari	17
4.	ભારતીય નાટ્યસાહિત્ય અને વર્તમાન રૂપકકાર શ્રી રેવાપ્રસાદ દ્વિવેદીના રૂપકો	DR. GOVIND CHAUDHARI	21
5.	*Silence! The Court is in Session* presents all at once-the judicialsystem, social structure as well as the freedom of a middle-class woman in the Indian context	Dr. Paresh K. Shah	24
6.	ભારતીય સાહિત્યનું ગૌરવ' શાકુન્તલ '	જાગૃતિબેન એસ. પટેલ	29
7.	नाट्य प्रयोग की नूतन सम्भावनाएँ- आधुनिक रूपकों में	प्रा. दीनेशसिंह जी. राज	31
8.	રસસૂત્રમાં ભરતમુનિનું યોગદાન	ભાનુબેન ખરચીયા	33
9.	ભારતીય નાટ્ય સાહિત્ય અને ભરતમુનીનું અભિનય નાટ્યશાસ્ત્ર	પ્રજાપતિ ભાવેશકુમાર કે.	37
10.	GUJARATI BHAVAI AS PERFORMING ARTS - FOLK THEATRE DRAMA	Jayantibhai V. Patel	45
11.	સંસ્કૃત નાટકોમાં ગીત-તત્ત્વ	Dr.USHABEN S.PATEL	50
12.	આધુનિક રંગમંચ પર અભિનયનું સ્વરૂપ	હેમલતાબેન જી. વ્યાસ	56
13.	ગુજરાતના સંસ્કૃત નાટ્યકારો.	મુકેશચંદ્ર છોટાલાલ ગોર	6068
14	*कवि शङ्कुधर विरचित 'लटकमेलकम्' प्रहसनम् : एक परिचयात्मक अभ्यास*	**डो. सुरेखा पटेल**	77
15	**Macbeth: A Play of Paradise to Pandemonium**	**Maya B. Chaudhary**	81
16	સંસ્કૃત નાટ્ય સાહિત્યમાં ત્રિપુરદાહ	આચાર્ય નિધિ જનકકુમાર	89
17	નાટ્ય સ્વરૂપ વિષયક સૈધ્ધાંતિક ચર્ચા	પ્રા. ગિરિશકુમાર કે. પરમાર	92
18	આધુનિક નાટ્ય કવયિત્રીઓના નાટકોમાં નારીપાત્રો	ડૉ. ડી.જે.ડોડીયા	97
19	ઉત્તરરામચરિત નાટકમાં વર્ણાશ્રમધર્મ	પ્રા.ડો.શૈલેષ કે.જોષી	105

Scanned with CamScanner

Volume – IX, Issue – VI, February - 2018
ISSN: 2348-9456
Impact Factor: 3.745

कवि शंङ्खधर विरचित 'लटकमेलकम्' प्रहसनम् : एक परिचयात्मक अभ्यास

डो. सुरेखा पटेल,

भाण की तरह संधि, सन्ध्यंग, लास्यांग और अंको के द्वारा विरचित निन्दय पुरुषों के कविकल्पित वृत्त को 'प्रहसन' कहा जाता है । प्रहसन के अनेक भेद मिलते है, जैसे शुद्ध संकीर्ण आदि । जहाँ पर तपस्वी, संन्यासी, ब्राह्मण आदि में से कोई एक धृष्ट नायक हो, वह 'शुद्ध' प्रहसन, जैसे 'कन्दर्पकेलि' । किसी व्यक्ति (धृष्ट से भिन्न) का आश्रय लेकर हास्य किया जाय वह 'संकीर्ण', जैसे 'धूर्तचरित' । जिस प्रहसन में बहुत धूर्तो, वेश्या, चेट, नपुंसक आदि का आश्रय लिया हो, वह भी 'संकीर्ण' प्रहसन कहलाता है और कनुक, कंचुकी, तापस आदि का जहाँ पर अनुकरण किया जाय वह 'विकृत' प्रहसन के अन्तर्गत आता है ।[1] जैसे 'लटकमेलक' आदि ।

अन्य संस्कृत आलंकारिकोने भी 'प्रहसन' नामक रुपक की विस्तृत चर्चा की है ।नाट्याचार्य भरतने प्रहसन के दो भेद कहे है - 'प्रहसनमपि विज्ञेयं द्विविधं शुद्धं तथा च सङ्कीर्णम् ।'[2] भरतने 'प्रहसन' की विस्तृत चर्चा भी की है ।[3]आचार्य धनंजयने 'प्रहसन' के तीन प्रकार शुद्ध, संङ्कीर्ण, वैकृत कहे है और इसकी विस्तृत चर्चा की है ।[4] शारदातनय भी प्रहसन के शुद्ध, संङ्कीर्ण और विकृत ऐसे तीन प्रकार कहते है ।[5] नाटयदर्पणकार ने भी 'प्रहसन' रुपक की चर्चा की है ।[6]

'लटकमेलकम्' प्रहसन की प्रस्तावना में सूत्रधार, राजा गोविन्ददेव का नाम निर्देश करता है ।[7] अतः कविवर शंखधर बारहवीं[8] शताब्दी के आरंभ में कन्नौज नरेश गोविन्दचन्द (बारहवी शताब्दी के पूर्वार्ध) के राज्यकाल में हुए थे । इन्होंने 'लटकमेलकम्' (लटक- धूर्त, मेलक - सम्मेलन) नामक प्रस्तुत प्रहसन की रचना की । कई अन्य जनश्रुतियों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह कवि शङ्खधर बारहवीं शताब्दी में विद्यमान थे ।[9]

'लटकमेलकम्' प्रहसन साहित्यजगत में बहुत ही लोकप्रिय और प्रसिद्ध है । इसकी लोकप्रियता तथा सर्वव्यापकता के विषय में डॉ. कीथ का कहना है – प्रहसन को लोकप्रिय तो होना ही चाहिए, लेकिन बारहवीं शताब्दी के पूर्व भाग में - 'कान्यकुब्ज नरेश गोविन्दचन्द के समय के – शंङ्खधर कवि के लिखे हुए 'लटकमेलकम्' से पहले का कोई प्रहसन नहीं मिलता है ।' इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बारहवीं शताब्दी में यही एकमात्र लोकप्रिय प्रहसन था । यद्यपि इससे ६०० वर्ष पूर्व का पल्लव नरेश महेन्द्रविक्रमवर्म विरचित 'मत्तविलास' प्रहसन उपलब्ध होता है । तथापि बीच की छूटी हुई कडी को जोडनेवाला यही प्रहसन है । इसके दो श्लोक (लटकमेलकम् : १/३८, १/९) दामोदर के पुत्र शाङ्गधर (ई.१३६२) विरचित सुभाषित

Scanned with CamScanner